विषय सूची

प्रथम खण्ड

पुण्य-पापकी व्याख्या १-६१

		पृष्ठांक
१	सृष्टिकी उत्पत्तिका निमित्त व त्रिविध प्रलयनिरूपण	१
२	द्विविध भोग, उनका निमित्त तथा जीवनका लक्ष्य	२
३	धर्मका निर्णय और त्रिविध बुद्धिके लक्षण	३
४	पुण्य-पापका निर्णय ...	...५
५	पुण्य व पापके हेतु राग व द्वेषपर विचार	...७
६	रागसे पुण्य व द्वेषसे पापमें रहस्य	...१३
७	जीव-विकासवाद-निरूपण ..	.. १८
८	मनुष्य योनिमें पुण्य-पापका बन्धन क्योंकर हुआ ?	२४
९	मनुष्य योनिमें किस-किस अवस्थामें कर्मका बन्धन नहीं रहता ? ..	. २६
१०	मनुष्येतर योनियोंमें पुण्य-पापका असम्भव और मनुष्य योनिमें जीवका कर्तव्य	...२८
११	प्रकृतिका अटल नियम ...	...३३
१२	प्रकृतिका अन्य अटल नियम ..	...४०
१३	प्रवृत्ति व निवृत्तिभेद तथा प्रवृत्तिमार्गकी पाँच श्रेणियाँ	४३
१४	प्रथम श्रेणी, उद्भिज्ज-मनुष्य अर्थात् पेटपालु	...४४
१५	द्वितीय श्रेणी, कीट-मनुष्य अर्थात् कुटुम्बपालु	...४६
१६	तृतीय श्रेणी, पशु-मनुष्य अर्थात् जातिप्रेमी	...४८
१७	चतुर्थ श्रेणी, 'मनुष्य'पदवाच्य-मनुष्य अर्थात् देशभक्त	५०
१८	पञ्चम श्रेणी, देव-मनुष्य अर्थात् तत्त्ववेत्ता	...५३
१९	उपसंहार ...	...५८

साधारण धर्म ६२-२६४

२० प्राणीमात्रका ध्येय केवल सुख है ...६२
२१ सुखका उद्गम स्थान और धर्मका स्वरूप ...६५
२२ धर्मका प्राण केवल त्याग है ७०
२३ भोग्य पदार्थोंमें सुखका असम्भव ...७४
२४ सुख इच्छानिवृत्तिमें ही है ७६
२५ सुखकी साक्षात् प्राप्ति केवल अहङ्कारसे पल्ला छुड़ानेमें है ७९
२६ स्वधर्म क्या है ? ८२
२७ धर्म व अधिकारका परस्पर सम्बन्ध ...८४

(१) पामर पुरुष ८८-१०६

२८ पामर-पुरुषके लक्षण और उसके प्रति उपदेश ...८८
२९ धार्मिक विवाहका उद्देश्य ९३
३० 'वैताल' शब्दकी व्याख्या ९४
३१ पामर-पुरुषोंद्वारा किये जानेवाले यज्ञ-दानादिका स्वरूप ९५
३२ पामर-पुरुषोंका प्राकृत स्वभाव तथा वैतालके चरणोंमें त्यागकी प्रथम भेट ...९८
३३ वैतालके चरणोंमें त्यागकी द्वितीय भेट ...१०१

(२) विषयी पुरुष १०६-१२७

३४ विषयी पुरुषके लक्षण १०६
३५ विषयी पुरुषके साथ परस्पर विचारोंका परिवर्तन तथा इहलौकिक पदार्थोंमें सुखका असम्भव ...११०
३६ स्वर्गसम्बन्धी भोग्य-विषयोंमें सुखका असम्भव ...११७
३७ सुखस्वरूपी वैतालके चरणोंमें त्यागकी तीसरी भेट...१२२
३८ त्यागकी तीसरी भेटका भावार्थ और उसका फल ...१२५

(३) निष्काम जिज्ञासु १२७-१५६

३९ चतुर्थ भेट व निष्काम-जिज्ञासुका स्वरूप .. १२७
४० भावका महत्व १२९
४१ बन्ध व मोक्ष हेतुक भावका स्वरूप ...१३०
४२ निष्काम-कर्मका उपयोग व स्वरूप ...१३२
४३ कर्मका महत्त्व १३६
४४ कर्मकी व्याख्या ...१३६
४५ कर्मकी अनिवार्यता १३८
४६ कर्मद्वारा प्रकृतिकी निवृत्तिमुखीनता ...१४१
४७ निष्काम-कर्मका रहस्य १४४
४८ कर्म-अकर्मका रहस्य १५१
४९ निष्काम-कर्मका उपसंहार और त्यागकी पञ्चम भेट १५५

(४) उपासक जिज्ञासु १५६-२३९

५० उपासना व भक्तिका अर्थ १५६
५१ प्रेम-महिमा १५७
५२ प्रेमका उत्तर १६०
५३ उपर्युक्त समतारूपी प्रेमका साधन ...१७०
५४ सगुण-भक्तिकी आवश्यकता ...१७३
५५ श्रद्धाका महत्त्व १७७
५६ सगुण-उपासनाका साधन, प्रथम श्रेणी ...१७९
५७ द्वितीय श्रेणी, श्रवण-भक्ति ...१८१
५८ तृतीय श्रेणी, कीर्तन-भक्ति ...१८३
५९ चतुर्थ श्रेणी, स्मरण-भक्ति व नाम-महिमा ...१८४

६० पञ्चम श्रेणी, प्रतिमा-पूजन अर्थात् पाद-सेवन, अर्चन, वन्दन-भक्ति ...२००
६१ प्रतिमापूजनकी अनिवार्यता ...२०४
६२ उपास्यदेव २१२
६३ विष्णु मूर्त्तिमें कारण-ब्रह्मरूप निर्गुण-भाव ...२१६
६४ शिव-मूर्तिमें कारण-ब्रह्मरूप निर्गुण-भाव ...२१६
६५ सूर्य-मूर्त्तिमें कारण-ब्रह्मरूप निर्गुण-भाव ...२२३
६६ गणेश-मूर्त्तिमें कारण-ब्रह्मरूप निर्गुण-भाव ...२२५
६७ शक्ति-मूर्त्तिमें कारण-ब्रह्मरूप निर्गुण-भाव ...२२६
६८ पूजाका रहस्य ...२३४
६९ उपासनाकी छठी श्रेणी मानसिक पूजा ...२३७

(५) वैराग्यवान् जिज्ञासु २४०-२६४

७० वैराग्यका हेतु व स्वरूप ...२४०
७१ वैराग्यवान्के चित्तकी अवस्था ...२४४
७२ वैराग्यको शुभागमन, चतुर्विध वैराग्य-निरूपण ...२५१
७३ वैराग्यशून्य पुरुषकी वेदान्त-प्रवृत्तिमें दोष ...२५५
७४ पूर्वपक्षीकी शका व समाधान ...२५८

द्वितीय खण्ड १-१३४

७५ तिलक-मत निरूपण ... १
७६ तिलक-मतके प्रथम अङ्कका निराकरण ... ४
७७ तिलक-मतके द्वितीय अङ्कका निराकरण ... १४
७८ तिलक-मतके तृतीय अङ्कका निराकरण ... २५
७९ तिलक-मतके चतुर्थ अङ्कका निराकरण ... ३३
८० तिलक-मतके पंचम अङ्कका निराकरण ... ३८

८१ तिलक-मतमें प्रमाणभूत गीता-श्लोकोंकी समालोचना ६०
८२ तिलक-मतके षष्ठ अङ्कका निराकरण ... ८६
८३ तिलक-मतके सप्तम अङ्कका निराकरण ... ८७
८४ तिलक-मतके अष्टम अङ्कका निराकरण ... ९३
८५ देशभक्त नवयुवकोंसे विनती ...१०६
८६ तिलक-मतके नवम अङ्कका निराकरण ...१११
८७ उपसंहार ...११२
८८ त्याग-वैराग्यपर पूर्वपक्ष ...११६
८९ उक्त पूर्वपक्षका समाधान ...११६

ज्ञान १२५-१४६

९० कर्मजन्य अपूर्व ज्ञानमें उपयोगी सामग्रीका जनक है १२५
९१ सद्गुरु-महिमा ...१३५
९२ ज्ञानमें उपयोगी त्रिविध कृपा और विचार-महिमा ..१४३

तत्त्व-विचार १४७-२०७

९३ एक निर्विकार कूटस्थ सत्ताके आश्रय ही अशेष विकारोंका सम्भव है (अङ्क १-५) ...१४७
९४ त्रिविध परिच्छेदोंकी अन्योऽन्याश्रयता (अङ्क ६-२६) १५१
९५ कारण-कार्य-अभेद (अङ्क-२७-३८) ...१६४
९६ जाग्रत् व स्वप्नका अभेद (अङ्क ३९-५२) ...१७३
९७ वशिष्ठ, वाचस्पति और एक जीववाद निरूपण तथा उक्त तीनों मतोंकी परस्पर सङ्गति(अङ्क ५३-७०)१८७
९८ उपसंहार ...२०५

परिशिष्ट भाग—मनकी एकाग्रता और तत्सम्बन्धी विभिन्न विचार व प्रार्थनाएँ—